IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लोक संगीत के संरक्षण व संवर्धन में कलाकारों का योगदान

प्रो0 किन्षुक श्रीवास्तव
शोध निदेर्षिका
वनस्थली विद्यापीठ

आयुषी खुराना
शोधार्थी

क्षेत्रीय व राज्य स्तर पर

लोक संगीत के संरक्षण व संवर्धन में लोक कलाकारों का बहुत योगदान रहा है। वे क्षेत्रीय व राज्य स्तर पर अपनी कला की लोकप्रियता को बढ़ा रहे हैं। वे क्षेत्रीय व राज्य स्तर पर प्रोग्राम करके अपनी कला को लोगों तक पहुँचा रहे हैं। कुछ कलाकारों से साक्षात्कार के बाद पता चला कि वे हरियाणा में अलग–अलग जाकर रागनी व सांगों को प्रस्तुत करते हैं जिससे हरियाणा के लोकसंगीत का प्रचार व प्रसार हो सके। ऐसे ही ये लोक कलाकार, लोक नृत्य व लोक वाद्यों का भी प्रचार कर रहे हैं। यही नहीं, बहुत से कलाकारों से साक्षात्कार करने के बाद ज्ञात हुआ कि वे अपनी कला का षिक्षण देकर अपनी संगीत की कला का प्रचार कर रहे हैं। जैसा कि हम जानते हैं कि लोक संगीत का आज भी हमारे समाज में बहुत महत्व है। अतः ये कलाकार अपनी कला को चाहे वो गायन हो या वादन या नृत्य, आज की पीढ़ी को सीखा कर उन्हें न सिर्फ गुणी बना रहे हैं बल्कि उनको आत्मनिर्भर भी बना रहे हैं। वह बच्चे भी लोक कलाकारों से न ही सिर्फ उनकी कला को सीखते हैं बल्कि उनके स्टेज का अनुभव भी सीखते हैं। इससे उनको सब तरह का प्रायोगिक व सैद्धान्तिक ज्ञान मिलता है। यह स्कूल हरियाणा के कई भागों में है तथा काफी बच्चे यहां पर ज्ञान प्राप्त कर रहे हैं। हमारे लोक कलाकार न ही सिर्फ विद्यालयों व कॉलेजों में बच्चों को सिखा रहे हैं बल्कि वह अपने बच्चों में भी कला का हस्तान्तरण कर रहे हैं।

लोक कलाकारों से साक्षात्कार के बाद ज्ञात हुआ कि वे अपनी आने वाली पीढ़ी को भी सिखा रहे हैं तथा उनके परिवार के बच्चे इस कला को बहुत अच्छे से सीख रहे हैं। लोक कलाकारों का मानना है कि चाहे उनके बच्चे इस आजीविका का साधन बनाए या न बनाए, फिर भी उन्हें यह कला तो सिखानी ही है।

उनके बच्चे भी पढ़ाई के साथ–साथ लोक संगीत को बड़ी श्रद्धा से सीख रहे हैं क्योंकि वह इस कला का महत्व भली भांति जानते हैं। लोक कलाकार क्षेत्रीय व राज्य स्तर पर कुछ कार्य'ाालाओं या किसी शिक्षण संस्था से जुड़कर, अपनी कला का संवर्धन व संरक्षण कर रहे हैं।

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर

लोक कलाकारों का योगदान सिर्फ क्षेत्रीय व राजकीय स्तर पर ही सीमित नहीं है। वह अपनी कला का परचम राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी फहरा रहे हैं। सरकार द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर बहुत से मेले आयोजित किए जाते हैं जहाँ पर लोक कलाकारों को आमन्त्रित किया जाता है तथा उन्हें अपनी कला का प्रदर्शन करने का मौका दिया जाता है। इससे न ही लोक कलाकारों की अच्छी आमदनी होती है बल्कि उन्हें अपनी कला को लोगों तक पहुँचाने का मंच भी मिलता है। इससे उनकी व उनकी कला की लोकप्रियता भी बढ़ती है। उनकी कला को सब जानते है, वह उन्हें और आगे बढ़ने का मौका मिलता है। मॉमन खां व अनेक कलाकारों से बात करने पर पता चला कि उन्हे अनेकों बार राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर अपनी कला का प्रदर्शन करने का मौका मिला। सरकार उन्हें अपनी कला का प्रस्तुत करने विदेश भेजती थी। उन्होने बताया कि वह अपना कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए रूस, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में गए हैं तथा कला का प्रचार–प्रसार किया। इसी प्रकार एक लोक कलाकार अपने देश की संस्कृति को सात समुन्द्र पार ले जाता है तथा लोगों तक पहुँचाता है। जब एक कलाकार को सरकार द्वारा ऐसा प्रोत्साहन मिलता तो नहीं यह सिर्फ उन्हें प्रोत्साहित करता है बल्कि अपनी कला में और ज्यादा मेहनत करने का बढ़ावा भी देता है। विदेशी लोग हमारी लोक कला को देखकर आकर्षित भी होते हैं व हमारी लोक संगीत, लोक नृत्य व लोक वाद्य को सीखने की कोशिश करते हैं, वे पर्यटक बनकर हमारे देश में आते हैं तथा साथ में विदेशी मुद्रा भी लाते हैं। विदेशी लोग हमारे देश की संस्कृति को जानकर बहुत प्रसन्न होते हैं तथा हमारी संस्कृति को जानने व सीखने के लिए आतुर रहते हैं।

कुछ राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाले मेले व कार्यक्रम–कुछ लोक कलाकारों से साक्षात्कार के बाद ज्ञात हुआ कि उन्हें सरकार द्वारा राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर मेलों, उत्सवों व कल्चरल फेस्टिवल्स में भेजा जाता था उनके नाम इस प्रकार हैं–

1. सूरजकुण्ड मेला

सूरजकुण्ड मेले का आयोजन हस्तशिल्प और हथकरघा को बढ़ावा देने के लिए तथा कारीगरों को उनके काम को प्रदर्षित करने के उद्देश्य से उचित मंच प्रदान करने के लिए किया जाता है।

सूरजकुण्ड मेला भारतवर्ष के विभिन्न राज्यों और विदशों से आये हुए सैलानियों को हरियाणा के परम्परागत माहौल से अवगत करता है। सूरजकुण्ड मेले में लोक कलाकारों को बुलाया जाता है जहाँ वह अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं तथा वाह वाही लूटते हैं। यह फरवरी में पंद्रह दिनों के लिए लगता है। इस प्रकार हरियाणवी लोक संगीत व कला का प्रचार–प्रसार होता है।

2. कुरूक्षेत्र महोत्सव / गीता जयंती महोत्सव

श्रीमद भगवद गीता, हिन्दुओं की पवित्र किताब मानी जाती है। गीता जयंती समारोह को हिन्दुओं द्वारा बहुत धूमधाम से मनाया जाता है। यह महोत्सव कुरूक्षेत्र, हरियाणा में मनाया जाता है। पूरे देश भर से श्रदालु इस महोत्सव में आकर इसका आनन्द उठाते हैं। इस महोत्सव की विशेष आकर्षण भजन, नृत्य, श्लोक, नाट्य होती है। बहुत से लोक कलाकारों को अपनी लोककला का प्रदर्शन करने के लिए यहाँ बुलाया जाता है।

3. मैंगो फेस्टिवल, पिन्जोर

यह हरियाणा पर्यटन द्वारा मनाया जाता है, इसमें विभिन्न प्रकार के आमों की प्रदर्शनी लगती है तथा बहुत से कल्चरल प्रोग्राम, शिल्प बाजार, फूड़ कोर्ट लगाते हैं। लोक कलाकार यहाँ आकर अपनी कला की प्रदर्शनी देते हैं। 2019 में 28वां आम मेला बनाया गया, दो दिन तक मनाए गए इस मेले में अनेक प्रकार की प्रतियोगिताएँ हुई तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए।

4. पिन्जौर हेरिटेज फेस्टिवल

पहला पिन्जौर हेरिटेज फेस्टिवल 2006 में पिन्जोर गार्डन में मनाया गया। हरियाणा पर्यटन द्वारा यह फेस्टिवल हर वर्ष मनाया जाता है। शाही विरासत का जश्न मनाते हुए, यह फेस्टिवल मनाया जाता है। पिंजौर विरासत महोत्सव मुख्य रूप से उत्तर भारतीय राज्य हरियाणा की संस्कृति और परंपरा की एक प्रदर्शनी है। एक सांस्कृतिक शंखनाद, इस कार्यक्रम में देश भर के कलाकार भाग लेते हैं जो अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं और इस आयोजन की सफलता में योगदान करते हैं।

5. ट्रेड फेयर

ट्रेड फेयर एक व्यापक गतिविधि है, इस मेले में देश और विदेश के कई व्यापारियों ने अपने स्टॉल लगाएं हैं। साक्षात्कार से ज्ञात हुआ कि हरियाणा के अनेकों लोक नृतकों, गायकों को यहाँ अपनी प्रदर्षनी देने का मौका मिलता है।

6. सांग उत्सव

यह हरियाणा पर्यटन तथ मल्टी आर्ट कल्चरल सेंटर, कुरूक्षेत्र द्वारा आयोजित किया जाता है। हरियाणवी लोक कला संस्कृति की विरासत को आमजन तक पहुँचाने के लिए हरियाणा सरकार लोक कलाकारों के माध्यम से प्रदेश के सभी जिलों में सांग उत्सव एवं रागनी उत्सव का आयोजन कर रही है जिससे युवा एवं नई पीढ़ी को हरियाणवी कला एवं संस्कृति के प्रति जागरूक किया जा सके। साक्षात्कार से ज्ञात हुआ कि लोक कलाकारों को यहाँ बुलाया जाता है तथा उन्हें कला के प्रदर्शन हेतु मंच दिया जाता है।

7. भारत पर्व, लाल किला

भारत पर्व, भारत के विभिन्न राज्यों के व्यंजनों और संस्कृति को प्रदर्षित करने के लिए पर्यटन मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित पाँच दिवसीय उत्सव है। यह आयोजन जनवरी के अंत में प्रतिवर्ष आयोजित किया जाता है। हरियाणवी लोक कलाकारों को यहाँ हर वर्ष बुलाया जाता है तथा कलाकारों को यहाँ हर वर्ष बुलाया जाता है तथा अपनी कला का प्रदर्शन करने का मौका दिया जाता है।

8. कुल्लू दषहरा

कुल्लू दशहरा पूरे भारत में प्रसिद्ध है। कुल्लू दशहरा उत्तरी भारत में हिमाचल प्रदेश राज्य में अक्टूबर के महीने में मनाया जाने वाला प्रसिद्ध अन्तर्राष्ट्रीय मेगा दशहरा उत्सव है। दुनिया भर से 4–5 लाख से ज्यादा लोग इस मेले में आते हैं। यह कुल्लू घाटी के ढालपुर मैदान में मनाया जाता है। यहाँ पर लोक कलाकारों को आमन्त्रित किया जाता है तथा वे हरियाणा की सांस्कृतिक कला का प्रदर्शन व प्रचार–प्रसार करते हैं।

9. कार्तिक कल्चरल फेस्टिवल

कार्तिक कल्चरल फेस्टिवल, हरियाणा सरकार व हरियाणा पर्यटन द्वारा आयोजित किया जाता है। इसका उद्देश्य हरियाणा की संस्कृति को महफूस रखना है। इस महोत्सव में हरियाणवी लोक कलाकार आकर अपनी कला को प्रदर्शित करते हैं।

10. कोणार्क फेस्टिवल

कोणार्क नृत्य और संगीत समारोह भारत के शास्त्रीय, लोक और आदिवासी नृत्य और संगीत को प्रदर्शित करने और लोकप्रिय बनाने के लिए कलाकारों को एक साथ लाता है। इस उत्सव की शुरूआत 1986 में पदमश्री गुरू गंगाधर प्रधान ने की थी। साक्षात्कार से ज्ञात हुआ कि हरियाणवी लोक कलाकारों को यहाँ भी अपनी कला का प्रदर्शन करने का मौका दिया जाता है।

11. गूग्गा नवमी

गूग्गा नवमी में भगवान गूग्गा की पूजा की जाती है जिन्हें सापों और नागों पर नियंत्रण रखने में महारत हासिल थी। यह त्यौहार मुख्य रूप से हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, पंजाब और राजस्थान में तीन दिनों तक मनाया जाता है। इस अवसर पर भव्य मेलों का आयोजन किया जाता है। यहाँ पर हरियाणवीं कलाकारों को मंच दिया जाता है तथा उनकी लोककला को सराहा जाता है।

ऐसे कुछ और भी महोत्सव है जहाँ पर हरियाणवी लोक कलाकारों को बुलाया जाता है जैसे – गंगौर महोत्सव, तीज महोत्सव, हल्दा फेस्टिवल आदि।

कुछ अंतराष्ट्रीय मेले व महोत्सव हैं जहाँ पर भी हमारे लोक कलाकारों को अपनी कला की प्रस्तुति देने का मौका मिलता है।

साक्षात्कार के द्वारा यह जानकारी मिली कि हमारे लोक कलाकारों ने इन सब जगहों में जाकर अपनी कला व संस्कृति का प्रदर्शन किया है तथा दश के बाहर भी हरियाणा का नाम रोशन व प्रसिद्ध किया है।

गजेन्द्र फोगाट जी से साक्षात्कार के बाद पता चला कि उन्होने इन सब देशों में अपने लोक संगीत का प्रदर्शन किया है।

ये अन्तर्राष्ट्रीय महोत्सव निम्नलिखित है –

(1) हरियाणवी नाईट, जर्मनी

(2) ब्रिसबेन, 2018

(3) हरित (हरियाणा डे), अमेरिका (टेक्सस)

(4) अन्तर्राष्ट्रीय जाट मेला, लंदन 2019

(5) हरियाणा डे फेस्टिवल, मेलबर्न

(6) दुबई में आयोजित दुबई महोत्सव

ऐसे ही **प्रेम देहाती जी** से ज्ञात हुआ कि उन्होंने 1994 से अब तक 8–10 देशों में अपनी कला का प्रदर्शन किया है। वे इजिप्ट, रूस, अमेरिका व लंदन भी जा चुके हैं। राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर अपना प्रदर्शन देने के बाद उनको इतनी ख्याति मिली कि उन्होंने एक प्रसिद्ध बॉलीवुड़ मूवी 'मटरू की बिजली का मन डोला' में भी हरियाणवी गाने गाए व देश भर में खूब नाम कमाया।

महावीर गुड्डू जो हरियाणा के बहुत नामी लोक कलाकार हैं, उनसे बात करके जानकारी मिली कि 1998 में उन्हें अमेरिका में **'आइरन मैन ऑफ हरियाणा'** का अवार्ड मिला, उसके बाद लंदन में उन्हें 'हरियाणा डे' पर हरियाणा गौरव से सम्मानित किया, इसके अलावा उन्होने बहुत सारे देशों में अपनी प्रस्तुति देकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हरियाणा के गौरव को बढ़ाया है। इतना ही नहीं महावीर गुडडू जी को पंडित लखमीचन्द लोक संगीत अवार्ड, हरियाणा कला रत्न, हरियाणा एजुकेशन डिपार्टमेन्ट द्वारा पंडित लखमीचन्द शिक्षा व संस्कृत पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया है। इसी वर्ष 22 मार्च को लंदन पार्लियामेन्ट में आपको कला प्रदर्शन का अवसर मिला तथा उन्हे वहाँ पर भारत गौरव के अवार्ड से भी नवाजा गया। इससे हमें यह ज्ञात होता है कि हरियाणा सरकार द्वारा लोक कलाकारों को राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय मंच पर प्रदर्शनार्थ बहुत अवसर मिलते हैं, तथा ये कलाकार अपने देश भारत तथा राज्य हरियाणा का नाम रोशन करते हैं।